विनोबा भावे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ० कु० पंकज शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
एन०ए०एस० कॉलिज, मेरठ (उ०प्र०)

ललित कुमार
शोधार्थी (इतिहास विभाग)
एन०ए०एस० कॉलिज, मेरठ (उ०प्र०)

सारांशिका

विनोबा भावे जी ने समाज और व्यक्ति के उत्थान के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं पूरी तरह व्यावहारिक सुझाव दिए है। इन सुझावों की प्रमाणिकता को पुष्ट करते हुए विनोबा भावे जी स्वयं कहते है कि जो भी बाते मैंने बताई है, सभी अपने अनुभव से बताई है। मुझे विश्वास है कि इन बातों पर अमल करने से हमारा अपना विकास तो होगा ही, समाज के लिए भी हमारी भूमिका सार्थक हो सकेगी। इस प्रकार विनोबा भावे ने बचपन से ही मूल्यों पर आधारित जीवन जिया और अपने आप को ऐसे गौरवपूर्ण स्थान पर स्थापित किया, जहाँ उनका जीवन स्वयं में मानव–मूल्यों का पर्याय बन गया।

मुख्य शब्द– व्यक्तित्व, कृतित्व, अहिंसात्मक, आन्दोलन, सिद्धान्त।

प्रस्तावना

आचार्य विनोबा भावे का नाम भारत के महात्माओं के नामों के बीच अंकित है। भारत की आजादी की लड़ाई में अहिंसात्मक रूप से इनका बहुत बड़ा योगदान रहा। ये मानवाधिकार की रक्षा और अहिंसा के लिए सदैव कार्यरत रहे। इन्होने राष्ट्र निर्माण के लिए भूदान आन्दोलन में योगदान दिया था। यह योगदान देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ। आचार्य विनोबा भावे भारत के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता तथा प्रसिद्ध गांधीवादी नेता थे। उन्हें भारत का राष्ट्रीय अध्यापक और महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी समझा जाता है। विनोबा भावे महात्मा गांधी के आदरणीय अनुयायी, भारत के एक सर्वाधिक जाने–माने समाज सुधारक एवं "भूदान यज्ञ" नामक आन्दोलन के संस्थापक थे। इनकी समस्त जिंदगी साधु संन्यासियों जैसी रही, इसी कारणवश ये एक संत तौर पर प्रख्यात हुए। विनोबा भावे अत्यंत विद्वान एवं विचारशील व्यक्तित्व वाले शख्स थे। महात्मा गांधी के परम शिष्य "जंग ए आजादी" के इस योद्धा ने वेद, वेदांत, गीता, रामायण, कुरान, बाइबिल आदि अनेक धार्मिक ग्रंथों का उन्होने गहन गंभीर अध्ययन एवं मनन किया। अर्थशास्त्र, राजनीति और दर्शन के आधुनिक सिद्धांतों का भी विनोबा भावे ने गहन अवलोकन चिंतन किया गया।

जीवन परिचय : विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 को गाहोदे, गुजरात, भारत में हुआ था। विनोबा भावे का मूल नाम विनायक नरहरि भावे था। एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में जन्मे विनोबा भावे ने गांधी आश्रम में शामिल होने के लिए 1916 में हाईस्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी।

गाँधी जी के उपदेशों ने भावे को भारतीय ग्रामीण जीवन के सुधार के लिए एक तपस्वी के रूप में जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया। विनायक की बुद्धि अत्यंत प्रखर थी। गणित उनका सबसे प्यारा विषय बन गया। हाईस्कूल परीक्षा में गणित में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए। बड़ौदा में स्नातक करने के दौरान ही विनोबा जी का मन वैरागी बनने के लिए आतुर हो उठा। 1916 में मात्र 21 वर्ष की आयु में गृह त्यागकर कर दिया और साधु बनने के लिए काशी नगरी की ओर रूख किया। काशी नगरी में वैदिक पंडितों के सानिध्य में शास्त्रों के अध्ययन में जुट गए।

महात्मा गांधी की चर्चा देश में चारों ओर चल रही थी कि वह दक्षिणी अफीका से भारत आ गए है और आजादी का बिगुल बजाने में जुट गए है। अखंड स्वाध्याय और ज्ञानाभ्यास के दौरान विनोबा भावे का मन गांधी जी से मिलने के लिए किया तो वह अहमदाबाद के कोचरब आश्रम में पहुंच गए। जब पहुंचे तो गांधी जी सब्जी काट रहे थे। इतना प्रख्यात नेता सब्जी काटते हुए मिलेगा, ऐसा तो कदाचित विनोबा ने सोचा भी न था। बिना किसी उपदेश के स्वालंबन और श्रम का पाठ पढ़ लिया। इस मुलाकात के बाद तो जीवन भर के लिए वह बापू के ही हो गए।

बापू के सानिध्य और निर्देशन में विनोबा भावे के लिए ब्रिटिश जेल एक तीर्थ धाम बन गई। सन् 1921 से लेकर 1942 तक अनेक बार जेल यात्राएं हुई। सन् 1922 में नागपुर का झंडा सत्याग्रह किया। ब्रिटिश हुकूमत ने सी०आर०पी०सी० की धारा 109 के तहत विनोबा को गिरफ्तार किया। इस धारा के तहत गुंडों को गिरफ्तार किया जाता है। नागपुर जेल में विनोबा को पत्थर तोड़ने का काम दिया गया। कुछ महीनों के पश्चात् अकोला जेल भेजा गया। विनोबा का तो मानो तपोयज्ञ प्रारम्भ हो गया। 1925 में हरिजन सत्याग्रह के दौरान जेल यात्रा हुई। 1930 में गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय कांग्रेस ने नमक सत्याग्रह को अंजाम दिया।

12 मार्च 1930 को गांधीजी ने दांडी मार्च शुरू किया। विनोबा फिर से जेल पहुंच गए। इस बार उन्हें धुलिया जेल रखा गया। राजगोपालाचार्य जिन्हें राजाजी भी कहा जाता था, उन्होने विनोबा के विषय में "यंग इंडिया" में लिखा था कि विनोबा को देखिए देवदूत जैसी पवित्रता है उसमें। आत्म विद्वता, तत्वज्ञान और धर्म के उच्च शिखरों पर विराजमान है वह। उसकी आत्मा ने इतनी विनम्रता ग्रहण कर ली है कि कोई ब्रिटिश अधिकारी यदि पहचानता नही तो उसे विनोबा की महानता का अंदाजा नही लगा सकता।

जेल की किसी भी श्रेणी में उसे रख दिया जाए वह जेल में अपने साथियों के साथ कठोर श्रम करता रहता है। अनुमान भी नहीं होता कि यह मानव जेल में चुपचाप कितनी यातनाएँ सहन कर रहा है। 11 अक्टूबर 1940 को गांधी द्वारा व्यक्तिगत

सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्रही के तौर पर बिनोवा भावे को चुना गया। प्रसिद्धि की चाहत से दूर विनोबा इस सत्याग्रह के कारण बेहद मशहूर हो गए। उनको गाँव–गाँव में युद्ध विरोधी तकरीरें करते हुए आगे बढ़ते चले जाना था। ब्रिटिश सरकार द्वारा 21 अक्टूबर को विनोबा को गिरफ्तार किया गया। सन् 1942 में 9 अगस्त को वह गांधी और कांग्रेस के अन्य बड़े नेताओं के साथ गिरफ्तार किये गये। इस बार उनको पहले नागपुर जेल में फिर वेलूर जेल में रखा।

विनोबा भावे की साहित्यिक गतिविधि : जेल में ही विनोबा ने 46 वर्ष की आयु में अरबी और फारसी भाषा का अध्ययन आरम्भ किया और कुरान पढ़ना भी शुरू किया। अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के विनोबा जल्द ही हाफिज ए कुरान बन गए। मराठी, संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, बंगला, अंग्रेजी, फेंच भाषाओं में तो वह पहले ही पारंगत हो चुके थे। विभिन्न भाषाओं के तकरीबन पचास हजार पद्य विनोबा को बाकायदा कंठस्थ थे। समस्त अर्जित ज्ञान को अपनी जिंदगी में लागू करने का भी उन्होने अप्रतिम एवं अथक प्रयास किया।

विनोबा भावे एक महान् विचारक, लेखक और विद्वान थे जिन्होने ना जाने कितने लेख लिखने के साथ–साथ संस्कृत भाषा को आम जन मानस के लिए सहज बनाने का भी सफल प्रयास किया। विनोबा भावे एक बहुभाषी व्यक्ति थे। उन्हें लगभग सभी भारतीय भाषाओं का ज्ञान था। वह एक उत्कृष्ट वक्ता और समाज सुधारक भी थे। विनोबा भावे के अनुसार कन्नड़ लिपि विश्व की सभी लिपियों की रानी है। विनोबा भावे ने गीता, कुरान, बाइबल जैसे धर्म ग्रंथों के अनुवाद के साथ ही इनकी आलोचनाएं भी की। विनोबा भावे भागवत गीता से बहुत ज्यादा प्रभावित थे। वो कहते थे कि गीता उनके जीवन की हर एक साँस में है। उन्होने गीता को मराठी भाषा में अनुवादित भी किया था।

विनोबा भावे का भूदान आंदोलन : विनोबा भावे का भूदान आंदोलन का विचार 1951 में जन्मा। जब वह आन्ध्र प्रदेश के गाँवों में भ्रमण कर रहे थे, भूमिहीन अस्पृश्य लोगों या हरिजनों के एक समूह के लिए जमीन मुहैया कराने की अपील के जवाब में एक जमींदार ने उन्हें एक एकड़ जमीन देने का प्रस्ताव किया। इसके बाद वह गाँव–गाँव घूमकर भूमिहीन लागों के लिए भूमि का दान करने की अपील करने लगें और इस दान को गांधीजी के अहिंसा के सिद्धांत से सम्बन्धित कार्य बताया। विनोबा भावे का सबसे मुख्य योगदान वर्ष 1955 में भूदान आंदोलन की शुरूआत करना था। वर्ष 1951 में तेलंगाना क्षेत्र के पोचमपल्ली ग्राम के दलितों ने विनोबा भावे से उन्हें जीवन यापन करने के लिए भूमि देने की प्रार्थना की थी। विनोबा भावे ने क्षेत्र के धनवान भूमि मालिकों से अपनी जमीन का कुछ हिस्सा दलितों को देने का आग्रह किया। इसे भूदान आन्दोलन कहा गया।

भावे के अनुसार, यह भूमि सुधार कार्यक्रम हदय परिवर्तन के तहत होना चाहिए न कि इस जमीन के बँटवारे से बडे स्तर पर होने वाली कृषि के तार्किक कार्यक्रमों में अवरोध आएगा, लेकिन भावे ने घोषणा की कि वह हृदय के बँटवारे की तुलना में जमीन के बँटवारे का ज्यादा पसंद करते है। हालांकि बाद में उन्होंने लोगों को ग्रामदान के लिए प्रोत्साहित किया, जिसमें ग्रामीण लोग अपनी भूमि को एक साथ मिलाने के बाद उसे सहकारी प्रणाली के अंतर्गत पुनर्गठित करते। आपके भूदान आन्दोलन से प्रेरित होकर हरदोई जनपद के सर्वोदय आश्रम, टडियांवा के द्वारा उत्तर प्रदेश के 25 जनपदों में श्री रमेश भाई के नेतृत्व में उसर भूमि सुधार कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाया गया।

विनोबा भावे के मौलिक कार्यक्रम और जीवन के उनके दर्शन को एक लेखों की श्रृंखला में समझाया गया है, जिन्हें भूदान यज्ञ (1953) नामक एक पुस्तक में संग्रहीत एवं प्रकाशित किया गया है। विनोबा को 1958 में प्रथम रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से 1983 में मरणोपरांत सम्मानित किया। 1975 में पूरे वर्ष भर अपने अनुयायियों के राजनीतिक आंदोलनों में शामिल होने के मुद्दे पर भावे ने मौन व्रत रखा। 1979 के एक आमरण अनशन के परिणामस्वरूप सरकार ने समूचे भारत में गौ हत्या पर निषेध लगाने हेतु कानून पारित करने का आश्वासन दिया।

विनोबा भावे महात्मा गांधी के आश्रम में–आचार्य विनोबा भावे महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। वे महात्मा गांधी के आश्रम में होने वाले सभी कार्यक्रमो में बहुत अधिक रूचि रखने लगे। इन कार्यों में पठन–पाठन, सामाजिक अवचेतना संबंधी कार्य आदि सदा होते रहते थे। महात्मा गांधी के सानिध्य में वे खादी वस्त्रों का प्रचार–प्रसार करने लगे, जो कालांतर में स्वदेशी आन्दोलन के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ। साथ ही हर जगह बच्चों को पढ़ाने, आस–पास स्वच्छता सफाई रखने के लिए लोगों को जागरूक करते रहे।

8 अप्रैल 1921 में विनोबा भावे, महात्मा गांधी के कहने पर महाराष्ट्र के एक गाँव वर्धा के लिए रवाना हुये। वर्धा में महात्मा गांधी का एक आश्रम चलता था, उसका कार्यभार उन्होने विनोबा भावे को सौपा, सन् 1923 में उन्होने "महाराष्ट्र धर्म" नामक एक मासिक पत्रिका निकालनी शुरू की। इस पत्रिका में वे वेदान्त के महत्व और उपयोगिता के ऊपर निबंध लिखते रहे। कालांतर में लोगों द्वारा पसंद किये जाने पर ये मासिक पत्रिका साप्ताहिक पत्रिका के रूप में आने लगी। लोगों को जागरूक करने में ये पत्रिका एक अहम भूमिका निभा रही थी। ये पत्रिका लगातार तीन साल तक निकलती रही। सन् 1925 में विनोबा भावे की कर्मठता और क्रियाशीलता को देखते हुये, महात्मा गांधी ने उन्हे केरल के एक छोटे से गाँव वैकोम भेज दिया। वहाँ पर हरिजनों को मंदिर में प्रवेश करने पर रोक थी, इस रोक को हटाने और समाज में समानता की भावना लाने के लिए गांधी जी ने ये जिम्मेवारी विनोबा भावे को दे दी।

विनोबा भावे को जेल एवं गिरफ्तारियाँ : देश में अंग्रेजों का शासन था। महात्मा गांधी एक तरफ लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे थे, तो दूसरी तरफ उन पर देश को अंग्रेजी हुकूमत से आजाद कराने की भी जिम्मेवारी थी। महात्मा गांधी के इन दोनो कार्यो में आचार्य विनोबा भावे भी बराबर के शरीक थे। देश में न तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता थी और न ही अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध कुछ भी कहने की। इस भयानक समय में किसी न किसी को तो आजादी की मांग करनी थी। महात्मा गाँधी इस ओर अहिंसात्मक रूप से आगे बढ़ रहें थे। इस दौरान सन् 1920 से सन् 1930 के बीच आचार्य को कई बार उनके द्वारा किये जा रहे जागरूकता के कामों को देख गिरफ्तार किया गया। वे इन गिरफ्तारियों और अंग्रेजी हुकूमत से बिल्कुल भी

नही डरे और सन् 1940 में इन्हें पांच साल की जेल हुई। इस जेल की वजह अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध अहिंसात्मक आन्दोलन था। लेकिन वे यहाँ भी हार नही माने और जेल में ही पढ़ना–लिखना आरम्भ कर दिया। जेल उनके लिये पढ़ने–लिखने की जगह बन गयी।

उन्होने जेल में रहते हुए "ईशावास्यवृत्ति" और "स्थित प्रज्ञ दर्शन" नामक दो पुस्तकों की रचना कर दी। विल्लोरी जेल में रहते हुए उन्होने दक्षिण भारत की चार भाषाएँ सीखी और "लोक नागरी" नामक एक लिपि की रचना की। जेल के दौरान ही उन्होने जेल में रहते हुये भगवद्गीता का मराठी भाषा में रूपांतरण किया और एक सीरिज के माध्यम से समस्त अनुवाद जेल में रहने वाले अन्य कैदियों में बाँटना शुरू किया। यह रूपांतरण बाद में "टॉक्स ओं द गीता" के नाम से प्रकाशित हुआ। जिसका अनुवाद अन्य कई भाषाओं में होता रहा। जेल से छूटने के बाद उनका निश्चय और दृढ़ हो गया। कालांतर में "सविनय अवज्ञा आन्दोलन" में उनकी मुख्य भूमिका रही। इतने कामों कों अंजाम देने के बाद भी वे आम लोगों में बहुत मशहूर नही थे। लोगों के बीच उनकी पहचान सन् 1940 से बननी शुरू हुई, जब महात्मा गांधी ने एक नए अहिंसात्मक आन्दोलन के लिये उन्हें प्रतिभागियों के रूप में चुना।

विनोबा भावे का सामाजिक और धार्मिक कार्य–बचपन में अपनी माँ की बातों का अनुसरण करते हुए आचार्य जीवन में धर्म का महत्व समझ गये थे। कालांतर में महात्मा गांधी का सामीप्य उनमें सामाजिक चेतना भरता रहा। विनोबा का धार्मिक दृष्टिकोण बहुत ही बड़ा था, जिसमे कई अन्य धर्मों के विचारों का सम्मेलन था। इनमें बहुधार्मिक विचारों का सम्मेलन इनकी एक युक्ति 'ऊँ तत सत' से समझा जा सकता है, इस युक्ति में समस्त धर्मों के प्रति आधार और सद्भावना देखने को मिलती है। इनका एक नारा था 'जय जगत'। इस युक्ति से और भी आसानी से उनके विचारों को समझा जा सकता है। इस नारे में वे किसी एक प्रान्त या राष्ट्र नही बल्कि समस्त विश्व का जयकार कर रहे है, जिसमें कई तरह के धर्म रहते हैं।

एक आम भारतीय के जीवन यापन को देखते हुए उन्हें ये महसूस हुआ कि इनका जीवन और भी बेहतर बन सकता है। उस सबको लेकर एक धार्मिक स्थल के निर्माण में कई परेशानियां हो रही थी, जिसका समाधान वे लगातार ढूँढ़ते रहें। नित परिश्रम से कोई भी कार्य सफल हो जाता है। आचार्य भी कालांतर में सफल हुए और उनके नेतृत्व में सर्वोदय आन्दोलन की नींव पड़ी। सर्वोदय आन्दोलन का मूल मकसद था समाज के सबसे पिछले वर्ग में खड़े लोगों को आगे लाना। गरीबों और अमीरों के बीच कोई फर्क न रहे और न ही समय में किसी तरह का जाति भेद रहे। दरअसल अंग्रेजी हुकूमत को समाप्त करने के लिए सबका एकजुट होना बहुत जरूरी था। इसके बाद एक और बहुत महत्वपूर्ण आन्दोलन की नींव इन्ही के द्वारा पड़ी। ये आन्दोलन यह दिखाता है कि आचार्य विनोबा भावे का हृदय कितना कोमल और त्याग से भरा हुआ था।

विनोबा भावे का ब्रह्मा विद्या मंदिर–यह आश्रम आचार्य विनोबा भावे द्वारा स्थापित आश्रमो में एक था। सह आश्रम स्त्रियों के लिये था। जहाँ वे स्वयं अपना जीवन चलाती थी। इस आश्रम के लोग एक साथ मिलकर अपने खाने की व्यवस्था के लिए खेती करते थे। खेती के दौरान वे महात्मा गाँधी के खाद्योत्पति के नियमों पर ध्यान देते थे, जिसमें सामाजिक न्याय और स्थिरता की बातें होती थी। आचार्य विनोबा और महात्मा गांधी की तरह इस आश्रम में रहने वाले लोग भी श्री मद्भागवत गीता पर बहुत विश्वास करते थे। यहाँ पर रहने वाले लोग सुबह उठ कर तैयार होते थे और उपनिषद् का पाठ करते हुए प्रार्थना करते थे। दिन के मध्य बेला में यहाँ विष्णुसहस्त्रनाम और संध्या के समय भगवद्गीता का पाठ होता था। इसमें 25 महिलाएँ थी और कालांतर में कुछ पुरूषों को भी उस आश्रम में काम करने की अनुमति दी गयी। सन् 1959 में इस आश्रम की स्थापना के साथ इस आश्रम को कुछ कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी। ये शुरूआती समय में महाराष्ट्र के पुणे स्थापित हुआ था। इस आश्रम के लोग जन–जन तक आचार्य और महात्मा गाँधी के विचारों को पहुँचाने की कोशिश कर रहे थे।

विनोबा भावे का सम्मान : सन् 1958 में आचार्य विनोबा भावे सामुदायिक नेतृत्व के लिए अन्तर्राष्ट्रीय रेमन मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले प्राप्तकर्ता थे। इसके अतिरिक्त सन् 1983 में देश के सर्वोच्च पुरस्कार मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

विनोबा भावे का निधन : आचार्य विनोबा भावे अपने जीवन के आखिरी दिन ब्रह्मा विद्या मंदिर में गुजारे। अंतिम समय में उन्होंने जैन धर्म की मान्यता के अनुसार समाधि मरण–संथारा का रास्ता अपनाया। विनोबा जी ने जब यह देख लिया कि वृद्धावस्था ने उन्हे आ घेरा है तो उन्होंने अन्न–जल त्याग दिया। जब आचार्य विनोबा जी ने अन्न और जल त्याग दिया जो उनके समर्थकों ने उनसे चैतन्यावस्था में बने रहने के लिये ऊर्जा के स्रोत की जानकारी चाही तो उन्होने बताया कि वे वायु आकाश आदि से ऊर्जा ग्रहण करते है। आचार्य बिनोवा भावे ने कहा कि मृत्यु का दिवस विषाद का दिवस नही अपितु उत्सव का दिवस है। इसलिये उन्होंने अपनी मृत्यु के लिये दीपावली का दिवस 15 नवम्बर को निर्वाण दिवस के रूप में चुना। इस प्रकार अन्न जल त्यागने के कारण एक सप्ताह के अन्दर 15 नवम्बर 1982 वर्धा, महाराष्ट्र में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। विनोबा जी के शरीर त्यागने के उपरान्त पवनार आश्रम की सभी बहनों ने उन्हे संयुक्त रूप से मुखाग्नि दी। इतिहास में इस तरह की मृत्यु के उदाहरण गिने चुने ही मिलते है। इस प्रकार मरने की क्रिया को प्रायोपवेश कहते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- शर्मा, रामगोपाल, आचार्य विनोबा भावे, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
- राजस्वी, एम.आई., विनोबा भावे, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली।
- श्री शर्मा, राम आचार्य, संत विनोबा भावे, युग निर्माण योजना प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।
- डा0 जैन, सुमन, आचार्य विनोबा की साहित्य दृष्टि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- शाह, कांति, विनोबा जीवन और कार्य, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।